Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

पुरुष रचनाकारों के साहित्य में चित्रित महिला

प्रा. डॉ. शेख शरफोद्दीन फक्रोद्दीन
हिंदी विभाग
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
बदनापूर

प्रारुप :

स्त्री-लेखन पितृसत्ताक व्यवस्था के पुनरीक्षण का महाभियान है। स्त्री-पुरुष समानता की पक्षधरता स्त्री-लेखन की बुनियादी शर्त है, लेकिन इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि अपनी विशिष्ट जैविक संरचना को भूलकर स्त्री परिवार और संबंधों की उष्या को नष्टकर डाले। स्त्री लेखन स्त्री को ही न माने जाने के पुसंवादी अहंकार का विरोध करता है और जीवन, करन, साहित्य प्रत्येक क्षेत्र में उन अभिव्यक्तियों को प्रश्नांकित करता है जो स्त्री को गौण, हीन, अबला, भोग्या एवं पुरुष-निर्भर मानता है। चूँकी परंपरा और संस्कार ग्रस्तता अलक्षित भाव से मनुष्य की चेतना एवं, मूल्यबोध को प्रभावित करती चलती है। जागरुक कहे जाने वाले चिंतक साहित्यकार भी स्त्री को हीन मानने की दुर्बलता का शिकार हो जाते हैं। स्त्री-आलोचन पुरुष रचनाकारों की रचनाओं का पुर्नपाठ दो उ÷ेश्यों की पूर्ति हेतु करती है - पहटन स्त्री को लेकर समाज के पूर्वग्रहों को उद्घाटित करना। दूसरा, तर्क द्वारा उन पूर्वग्रहों को खारिज करते हुए पाठक के भीतर स्त्री को मनुष्य समझने क चेतना विकसित करना।

बीज शब्द :

पितृसत्ताक व्यवस्था, स्त्री-पुरुष समानता, पुसंवादी अहंकार, स्त्री आलोचना, मनुष्य चेतना एवं मूल्यबोध

प्रस्तावना :-

अनादि काल से ही स्त्री सृष्टि के केंद्र में रही हैं। स्त्री मनुष्य के रुप में एवं एक तत्व के रुप में सृजन का पयथि है। सर्जक और संहारक है, तथा उसका स्वरुप दैवीय और मानवीय दोनों धरातलों पर स्वीकृत है। पौराणिक गाथाओं में स्त्री जननी, पोषक, संरक्षक और संहारक के रुप में वर्णित है। साहित्य और कला माध्यमों में सर्वाधिक चित्रण और वर्णन स्त्री का ही हुआ है। विश्व साहित्य के केंद्र में स्त्री ही सभी युगों मे विद्यमान रही है। गोदान, त्यागपत्र और नदी के द्वीप हिंदी की तीन कालजयी कृतियाँ है। ये तीनों कृतियाँ बीसवीं सदी के राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन की साक्षी रही है। यह वह दौर था, जब राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक स्वतंत्रता प्राप्त कर देश-विश्व के सामने अपनी अस्मिता प्रदान कर देना चाहता था। जाहिर है कि स्त्रियों की पराधिनता एक चुनौती की तरह इस युग के सामने आयी। पंडिता रमाबाई, सावित्रीबाई फुले, अज्ञात हिंदु महित्न, रुकैया सखवता हुसैन, शिवरानी देवी, सुभद्राकुमारी चौहान, इस्मत चुगताई, रशीद जहाँ, महादेवी वर्मा ने साहित्य सृजन के माध्यम से पहली बार

स्त्री मानस को प्रमाणित अभिव्यक्ति दी जो पुरुष रचनाकारों के बराबरी की थी। हिंदी साहित्य में बेशक उससे पहले १५ वीं शताब्दी में मीराँबाई अपनी पीडा एवं विद्रोह को अभिव्यक्त कर चुकी थी परंतु कृष्ण-भक्ति का आरोपण कर उनके अभिप्रेत अर्थ का वहीं दम घोंट दिया गया था। १९ वीं सदी के अंत और २० वीं सदी के प्रारंभ में जब इन स्त्री रचनाकारों ने लेखन किया तो पहली बार स्त्री-पुरुष की दृष्टि, संवेदना और प्राथमिकता में फर्क महसूस किया गया। ये स्त्री रचनाकार धर्मग्रंथ और सामाजिक व्यवस्थाओं द्वारा स्त्री को हीन माने जाने के पुर्वगृह का विराध करती है। स्त्री पुरुष समानता का आग्रह करती दिखाई देती है।

अशिक्षा और सामाजिक कुरीतियों के प्रति असहिष्णुता दिखाते हुए एक नई समाज व्यवस्था को सतह पर लाना चाहती है। पीडा, सहानुभूति और आत्मदमन की अपेक्षा असहमति और असंतोष को अपना हथियार बना कर ये संबंध और व्यवस्था का नया प्रारुप से ही स्त्री चित्रण अधिक हुआ। अबलला रक्षणीया और भोग्या की छवि। प्रस्तुत स्त्री रचनाकारों के संदर्भ में तद्युगीन पुरुष रचनाकारों द्वारा चित्रित स्त्री लेखन स्त्री के प्रति तत्कालीन समाज एवं स्वयं लेखक की दृष्टि को समझाने में सहायक है।

गोदान में चित्रित स्त्रीपात्र : 'औरत का धरम है कि वह गम खाए' हंस और जागरण की संपादकीय टिप्पणियों में प्रेमचंद ने स्त्री चेतन, स्वतंत्र और अधिकार संपन्न करने क लिए मुहिम चलते हैं। बाल विधवा शिवराणी देवी से विवाह कर वे स्त्रियोंध्दारक के रुप में अपनी छवि पुष्ट करते भी नजर आते है, लेकिन स्त्री-दृष्टि से गोदान का पुर्नपाठ उनकी सामंती दृष्टि को ही स्पष्ट करता है। धनिया, मालती और गोवींदी-गोदान के तीन स्त्री पात्र प्रेमचंदयुगीन उन पूर्वग्रहों की पुष्टि करते दिखाई देते हैं। जो की स्त्री जीवन को सार्थकता मातृत्व, पत्नित्व और गृहिणात्व में समझते हैं। गोदान की वास्तविकता यह है कि होरी के सहमति के बिना उसके विद्रोह की ध्वनि, गति और जिंदगी कुछ भी नहीं होरी अपनी निश्चित प्राथमिकताएँ है - मरजाद, कुष्ठ परतिसठा, भाईयों के साथ खून का रिश्ता और इसके निर्वाहण के लए बँधी हुई पारंपारिक दृष्टि।

होरी-शासित गृह राजनिति में धनिया की हैसियत एक मुहरे से ज्यादा नहीं है। पुरुष के मन और समाज की संरचना जानने वाली धनिया अपनी पराधीन स्त्री नियति को खूब पहचानती है। वह जानती है कि नैतिकता के दोहरे मानदंड पुरुष के लिए अपनी पत्नी देवी और दूसरों की पत्नी को कुलटा मानकर गुलधरै उडाने की घूट देते है। जब स्त्री ने अपने अस्तित्व को महसूस कर अन्याय के खिलाफ जरा भी कसमसाहट की है, बड़े बुजुगों ने उसकी 'गाँव' पर नसीहत के घडों से पानी उडेल दिया है - "औरत का धरम है कि वह गम खाए।" पति के अस्तित्व के बिना समाज स्त्री को नहीं स्वीकारता। पति को पाने के ललसा में अगर विधवा स्त्री यदि झुनिया की तरह किसी गोबर का हाथ पकड़ अपना सर्वस्व दान कर दे तो दोषी गोबर नही है, दोषी झुनिया है। लडकों से भूल-चूँक होती रहती है।

मालती धनिया का विलोम नहीं, लेकिन उससे भिन्न तो नहीं है। पुरुष मंडली में उन्मुक्त घुमती तथा खन्ना की मित्र के रुप में, प्रेमचंद ने मालती का खूब मजाक उडाया है। मालती को प्रतिष्ठा दे तभी कर सकते थे जब वह पाश्चात्य शिक्षा-दिक्षा भुल कर भारतीय रंग में रंग जाए।

गोदींदी को वे आदर्श स्त्री छवि के रुप में गढ़ते है। मुँहजोर, चपल, खुशमिजाज, आत्मनिर्भर मालती के सामने गोदींदी गंभीर, उदास, सादगी के परिपूर्ण आत्मसंकुचित महिला है। गोदींदी मेहता की स्थापनाओं से असहमति जताते हुए कहती है कि "भूल जाइए कि नारी श्रेष्ठ है और सारी जिम्मेदारी उसी पर है, श्रेष्ठ पुरुष है और उसी पर गृहस्थी का सारा सार है। प्रेमचंद के स्त्री पात्र रचमिता क रुप में प्रेमचंद के अंतविरिधों को उजागर करते हैं। एक उपन्यास, दर उपन्यास स्त्री जीवन में नरक रचती समस्याओं को उठाकर देखते हैं। भरसक समाधान जुटाते है और स्त्री के पक्ष में जनमत बनाने की कोशिा करते हैं, लेकिन जैसे ही क्षिमरी, सिकुडी, बिसूरती अनुगता स्त्री उत्साह से स्वयं झंडा गाडती नेतृत्व करती है तब वे हत्बुध्दि से जम जाते हैं। कहीं कहीं नैतिकता के दोहरे मानदड की रक्षा भी करते हैं।

त्यागपत्र में चित्रित स्त्री-पात्र

'मैं चिडियाँ होना चाहती हूँ।' त्यागपत्र जैनंद्रकुमार का महत्वपुर्ण उपन्यास है जिसमें स्त्री मन की विवशताओं को समाज के सामने प्रस्तुत करते हैं। उपन्यास की नायिका मृणाल हिंदी साहित्य की पहली आधुनिक स्त्री है जो स्त्री-मुक्ति का परचम लहराए बिना नारी मुक्ति के मर्म को समझ सकी है और मुक्त नारी का ज्वलंत उदाहरण बन कर उभरी है। प्रथमदृष्ट्या मृणाल गोविंदी का विलोम जान पडती है। मानसिक दृढता एवं स्वतंत्रता अर्जित कर वहह वैचारिकी जगत में अपना ठोस योगदान देना चाहती है। उसकी छोटी-छोटी एसरते दरअसल बडे-बडे हौसलो और सपनों की ओर बढ़ते कदम है। उपन्यास के प्रारंभ में ही वह स्वीकारती है कि - "मैं चिडिया होना चाहती हूँ... उसके छोटे-छोटे पंख होते हैं... पंख खोल वह आसमान में जिधर चाहे उड़ जाती हैं।"

निष्कर्ष :

प्रेमचंद से लेकर आज तक अनेक पुरुष साहित्यकारों ने स्त्री समस्या को अपना विषय बनाया परंतु उस रुप में नहीं लिखा जिस रुप में महिला लेखिकाओं ने लिखा। पुरुष साहित्यकारों के साहित्य में कहीं कहीं नारी के मन को पहचानना वहीं कहीं नारी की दिशाहीनता दूविधाग्रस्ता कूंठा आदि का भी विश्लेषण मिला है। तो कहीं कहीं सामंतवाद एवं पितृसत्तात्मकता का भी परिचय मिलता है।

संदर्भ ग्रंथ

१) आज कल - मार्च २०१३.
२) हिंदी गदय का इतिहास - डॉ. रामचंद्र तिवारी
३) हिंदी उपन्यासों में नारी - डॉ. शैली रस्तोगी